हिन्दुस्तान
www.livehindustan.com
अपना गोरखपुर
गोरखपुर
शनिवार
30 सितंबर 2023

ब्रह्मलीन महंत दिग्विजयनाथ व महंत अवेद्यनाथ की पुण्यतिथि समारोह के उपलक्ष्य में संगोष्ठी का तीसरा दिन

गुरु के बराबर है वैद्य का स्थान : प्रो. सिंह

गोरखपुर, निज संवाददाता। गोरखनाथ मंदिर में आयोजित साप्ताहिक पुण्यतिथि समारोह के अंतर्गत आयोजित संगोष्ठी के क्रम में तीसरे दिन शुक्रवार को 'आयुर्वेद संपूर्ण आरोग्यता की गारंटी' विषय के मुख्य वक्ता आयुष विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. एके सिंह ने कहा कि आयुर्वेद शरीर की आरोग्यता की गारंटी देता है। भारत में हजारों वर्ष पूर्व से यह चिकित्सा पद्धति सफलता पूर्वक चलाई जा रही है। वर्तमान सरकार के प्रयास से धीरे-धीरे उस प्राचीन पद्धति की ओर लौट रहे हैं। हमारी संस्कृति में वैद्य को गुरुतुल्य बताया गया है।

उन्होंने कहा कि शास्त्रों में देवताओं के वैद्य अश्विनी कुमार का वर्णन मिलता है। आयुर्वेद स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य का रक्षण करने के साथ ही रोगी के उपचार की विधि बताता है। एक अध्ययन में पूरे विश्व में भारतीय थाली को सर्वश्रेष्ठ और पौष्टिकता युक्त बताया गया है। आज हम फास्ट फूड के अभ्यस्त हो रहे हैं, जो स्वास्थ्य के लिए अत्यंत ही हानिकारक होता है।

वहीं सवाई आगरा से पधारे ब्रह्मचारी दासलाल ने कहा कि आयुर्वेद विश्व की प्राचीनतम कारगर चिकित्सा पद्धति है।

गोरखनाथ मन्दिर में आयोजित साप्ताहिक पुण्यतिथि समारोह के उपलक्ष्य में आयोजित संगोष्ठी में मंचासीन अतिथि।

योग से अलग नहीं किया जा सकता आयुर्वेद

कटक उडीसा से पधारे महंत शिवनाथ ने कहा कि आयुर्वेद से योग को अलग नही किया जा सकता। आसन, प्राणायाम और संतुलित दिनचर्या स्वस्थ रहने के सबसे उपयोगी साधन है। आयुर्वेद और योग जीवन को सदैव नवीनता प्रदान करते है। कार्यक्रम की शुरुआत वैदिक मत्र उच्चारण के साथ हुआ। इस अवसर पर गोरखनाथ मंदिर के प्रधान पुजारी योगी कमलनाथ, कालीवाडी के महंत रविन्द्र दास, महंत संतोषदास, संतुआ बाबा और महंत पंचाननपुरी मंचासीन रहे।

स्वास्थ्य का स्वस्थ रक्षण ही आयुर्वेद : डॉ. मंजूनाथ

विशिष्ट वक्ता गुरु गोरक्षनाथ आयुर्विज्ञान संस्थान सोनबरसा के प्राचार्य डॉ. मंजूनाथ ने कहा कि स्वास्थ्य का स्वस्थ रक्षण ही आयुर्वेद है। आयुर्वेद हमारी आरोग्यता को पूर्ण बनाए रखता है। अध्यक्षीय उद्बोधन में एमपी शिक्षा परिषद् के अध्यक्ष व पूर्व कुलपति प्रो. उदय प्रताप सिंह ने कहा कि आयुर्वेद विश्व की सर्वश्रेष्ठ चिकित्सा पद्धति है। यह पूर्णतया प्राकृतिक और आध्यात्मिक है। इस पद्धति मे हमारे पर्यावरण में विद्यमान वनस्पतियो औषधीयो व तत्वो के माध्यम से ही रोगो का उपचार बताया गया है।

भगवान की भक्ति सभी पापों का सर्वश्रेष्ठ प्रायश्चित

श्रीमद्भागवत कथा

गोरखपुर, निज संवाददाता। साप्ताहिक श्रीमद्भागवत कथा के चौथे दिन व्यासपीठ से कथाव्यास वृंदावन मथुरा से पधारे भागवत भास्कर कृष्णचंद्र शास्त्री ने कहा कि सनातन धर्म भारतीय संस्कृति का प्राण तत्व है, इस धर्म के चार स्तंभ है हिंदू, जैन, बौद्ध और सिख। इन चारों संप्रदायों में कोई वास्तविक भेद नहीं है। यह सब सनातन संस्कृति को मानने वाले हैं।

उन्होंने कहा कि भगवान बुद्ध हों, भगवान महावीर या गुरुनानक देव। सभी भगवान विष्णु ही हैं। सब उन्हीं की भक्ति करते हैं। दुनिया के सभी पापों का सर्वश्रेष्ठ प्रायश्चित यदि कोई है तो वह है भगवान की भक्ति। भगवान की कृपा से सभी पाप नष्ट हो जाते हैं। जीव की जितनी क्षमता पाप करने की है, उससे अनंत गुना क्षमता भगवान के नाम में पाप को नष्ट करने की है। भगवान के नाम की महिमा इतनी है कि जीवन

कथावाचक आचार्य कृष्ण चन्द शास्त्री

भर पाप करने वाला अजामिल मृत्यु समीप होने पर जब भगवान के नाम वाले अपने पुत्र को बुलाता है तो उसके लिए बैकुंठ का द्वार खुल जाता है। भारतीय संस्कृति में नारी महिमा बताते हुए कहते हैं कि हमारे शास्त्रों में विवाह के बाद पत्नी का त्याग करना सबसे बड़ा जघन्य अपराध है। सनातन धर्म में तलाक नाम को कोई चीज नहीं है। यहां तो पति-पत्नी का साथ सात जन्मों का संबंध होता है। साधु शब्द की व्याख्या बताते हुए बताया कि जो सभी बिगड़े लोगों को सुधार दे वही साधु होता है। कथा के अंत में गोकुल में भगवान का जन्मोत्सव मनाया गया।